आचार्य अजितसेन

जीवन-परिचय : अजितसेन नाम के अनेक विद्वान हुए हैं। प्रस्तुत आचार्य अजितसेन सेनगण के विद्वान और तुलु देश के निवासी थे। इससे अधिक इनका परिचय प्राप्त नहीं है।

आचार्य अजितसेन का समय विक्रम की 13वीं शताब्दी माना जाता है—

रचना-परिचय : आचार्य अजितसेन की दो रचनाएँ उपलब्ध हैं।

1. शृंगारमंजरी : यह छोटा-सा अलंकार शास्त्र का ग्रन्थ है। इसमें तीन परिच्छेद (अध्याय) हैं, जिनमें संक्षेप में रस, रीति और अलंकारों का वर्णन है।

2. अलंकार चिन्तामणि : यह ग्रन्थ भी अलंकार का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में पाँच परिच्छेद हैं। कवि ने अलंकारों के उदाहरण में समन्तभद्र, जिनसेन और हरिचन्द्र आदि अनेक आचार्यों के ग्रन्थों के पद्यों को भी लिया है।

आचार्य अजितसेन के ये काव्य उनकी काव्य शास्त्र विषयक धारणा का रूप है। उन्होंने लिखा है कि काव्य शब्दालंकार तथा अर्थालंकार से, नवरसों से और व्यंग्यादि अनेक अर्थों से युक्त होना चाहिए।